



SHRI HIMMATARAM BHAMBHU

Shri Himmataram Bhambhu is a Farmer, Vanyajeev Premi, Paryavaran Premi, environmentalist and working selflessly for protection of nature. He planted around 5.5 lakh saplings throughout the Rajasthan and upto date 3.5 lakh saplings converted into full tree. He filed 28 cases under Wildlife Protection Act against the poachers and sent 14 poachers behind the bars. He also filed 8 cases to prevent Animal cruelty.

2. Born on 14th February, 1956, in a poor farmer family in Village Sukhwasi, District Nagaur, Rajasthan, Shri Bhambhu is highly attached to his grand mother Late Smt. Naini Devi and due to her support and inspiration he planted a Peepal tree in his Village in the year 1975 and started taking care of the tree. His grand mother told at the time of planting of the Peepal sapling that "Himmata Plant trees and save wild animals because serving of trees and innocent wild animals is serving of God". After a short period as the Peepal tree established he decided to work for trees, wild animals and environment. He has spent his all savings; awards amount and money received from his only son for afforestation and serving of wild animals.

3. Shri Bhambhu rescued many peacocks, chinkara, black buck and helped to release them back to natural habitat. He distributed more than 2.5 lakh treated seeds of Khejari tree free of cost through various programs and after germination 82366 seeds became full tree. Besides these he planted 8000 plants in Pandit Jawahar Lal Nehru Hospital Nagaur, Girls College Nagaur, Gramotthan Vidyapeeth Nagaur, Dargah Road Nagaur, Hawai Patti, Khunda Mata Temple Gogelavn, Nagaur Stadium, Panchodi and at several places in Nagaur city. He inspired 1672 drug addicted people to quit drugs. He also inspired 3.66 lakh children of Government and private schoolsto take oath for "not to fire crackers on Deepawali".

4. In 1998, Shri Bhambhu purchased 6 Hectares deserted land to develop it according to his dream and he planted 11,000 diversified plants in this land, which is now providing a better micro climate to Nagaur. He also set an awareness centre in his land for providing training & experience to all school children, farmers and other people named as "Harima Paryavaran Prashikshan Kendra, Nagagur". In his land around 300 peacock and total more than 1000 birds and animals are residing and are feeded by Shri Bhambhu. He provides 20 Kg grains to feed and 300 bowls water to drink water every day to birds and wild animals in his land. He promotes awareness for environments, saving of wild animals, agro forestry and biodiversity through 4328 Van Mahotsav, 5792 Environment Sangoshthe, State level 1.18 Paryavaran Chetana Sammelan and 900 km march fast along with Forest Department throughout the Rajasthan State specially in Nagaur, Jodhpur, Jaisalmer, Baramer, Sikar, Bikaner, Ajmer District.

5. Shri Bhambhu is the recipient of numerous awards and honours. He received "Ishwar Sewa Samman - 2019" by Rastriya Sewa Bharti and Sant Ishwar Foundation, New Delhi. In 1999, Smt. Menaka Gandhi "People for Animal", made a statement that "India needs more people like him". He was honorary wildlife warden for Rajasthan Government from 2001 to 2013. He received most prestigious "State Level Amrita Devi Bisnoi Puruskar" from Forest Minister of Rajasthan in 2003. He also received highest State Level Award "Rajiv Gandhi Paryavaran Sanrakshan Puruskar 2014" by the Chief Minister of Rajasthan. He received Rajya Satriya Sarvottam Van Prahari Puruskar -1999" by Governor of Rajasthan, "Paryavaran Ratna Puruskar - 2005" by UNESCO Federation from Chief Secretary of Rajasthan Government, " Veer Durgadas Rathore Award — 2016" by Maharaja Gaj Singh, "Haldhar Ratna Award-2014" by the Chief Minister of Rajasthan. He received "Van Vistarak Puruskar 2004, 2005" by Forest Department, "Karnadhar Samman 2012" by daily news paper Dainik Patrika and "Green Ideal Award - 2011" by daily news paper Dainik Bhaskar. He is continuously & silently working for his nobel vision and as a result since 1992, he has received more than five hundred Awards from various Government & autonomous bodies, NGO's, Forest Department, Districts Collector, District Superintendent of Police, etc.





श्री हिम्मताराम भांभू

श्री हिम्मताराम भांभू एक किसान, वन्यजीव प्रेमी, पर्यावरण प्रेमी, पर्यावरणविद हैं और प्रकृति के संरक्षण के लिए निःस्वार्थ कार्य कर रहे है। उन्होंने पूरे राजस्थान में लगभग 5.5 लाख पौधे लगाए और अब तक इनमें से 3.5 लाख पौधे पूर्ण विकसित पेड़ बन गए हैं। उन्होंने वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत 28 शिकारियों के खिलाफ मामले दायर कराए और 14 शिकारियों को जेल भिजवाया। श्री भांभू ने पशुओं पर क्रूरता रोकने के लिए भी 8 मामले दायर कराए।

2. 14 फरवरी, 1956 को राजस्थान के नागौर जिले के सुखवासी गाँव में एक गरीब किसान परिवार में जन्मे, श्री भांभू अपनी दादी स्वर्गीय श्रीमती नलिनी देवी से बहुत लगाव रखते हैं और उनके प्रोत्साहन एवं प्रेरणा से श्री भांभू ने वर्ष 1975 में अपने गाँव में एक पीपल का पेड़ लगाया तथा उस पेड़ की देखभाल करने लगे। पीपल का पौधा लगाते समय उनकी दादी ने कहा कि "हिम्मत पेड़ लगा और जंगली जीवों की रक्षा कर क्योंकि पेड़ों और निरीह जंगली जीवों की सेवा ही भगवान की सेवा है।" कुछ समय बाद जब पीपल का पेड़ बड़ा हो गया तब श्री भांभू ने पेड़ों, जंगली जीवों और पर्यावरण के लिए काम करने का प्रण लिया। उन्होने अपनी पूरी बचत, पुरस्कार राशि और अपने इकलौते पुत्र से प्राप्त पैसे वनीकरण और जंगली जीवों की सेवा में लगा दिए।

3. श्री भांभू ने कई मोरों, चिंकारा, काले हिरणों को बचाया और उन्हें उनके प्राकृतिक बसेरों में वापस पहुंचाने में मदद की। उन्होंने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से खेजरी के पेड़ के 2.5 लाख से अधिक उपचारित बीज का मुफ्त वितरण किया और इनमें से 82,366 पौधे अंकुरण के बाद पूर्ण विकसित हरे पेड़ बने। इनके अलावा, उन्होंने पंडित जवाहर लाल नेहरू अस्पताल, नागौर, महिला महाविद्यालय, नागौर, ग्रामोत्थान विद्यापीठ, नागौर, दरगाह रोड, नागौर, हवाईपट्टी, खुंदामाता मंदिर गोगेलवन, नागौर स्टेडियम, पंचोड़ी और नागौर शहर में कई जगहों पर 8000 पौधे लगाए। उन्होंने 1672 नशे के आदी लोगों को भी नशा छोड़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सरकारी और निजी विद्यालयों के 3.66 लाख बच्चों को "दीपावली पर पटाखे न जलाने" की शपथ दिलवाई।

4. वर्ष 1998 में, श्री भांभू ने 6 हेक्टेयर रेतीली जमीन खरीदी ताकि उसे अपने सपने को साकार करने के लिए विकसित कर सकें। उन्होंने अपनी इस जमीन में अलग–अलग प्रकार के 11000 पौधे लगाए, जो अब नागौर को छोटे से हिस्से में बेहतर वातावरण दे रहे हैं। उन्होंने सभी स्कूली बच्चों, किसानों और अन्य लोगों को प्रशिक्षण और अनुभव प्रदान करने के लिए अपनी जमीन में "हरिमा पर्यावरण प्रशिक्षण केंद्र नागौर" नाम से एक जागरूकता केंद्र भी स्थापित किया। उनके केंद्र में लगभग 300 मोर तथा 1000 से ज्यादा दूसरे पक्षी और पशु रहते हैं और श्री भांभू उनका भरण पोषण करते हैं। वह अपनी जमीन में रहने वाले पक्षियों और जंगली पशुओं के खाने के लिए 20 किलोग्राम अनाज और पीने के 300 कटोरे पानी प्रतिदिन उपलब्ध कराते हैं। उन्होंने वन विभाग के साथ 4328 वन महोत्सव, 5792 पर्यावरण संगोष्ठी, 118 राज्य स्तरीय पर्यावरण चेतना सम्मेलन और 900 किलोमीटर की पदयात्राओं द्वारा पूरे राजस्थान राज्य, विशेषकर नागौर, जोधपुर, जैसलमर, बाड़मेर, सीकर, बीकानेर, अजमेर जिलों में, पर्यावरण, जंगली जीवों को बचाने, कृषि–वानिकी और जैव विविधता के बारे में जागरूकता बढ़ाने का काम किया।

5. श्री भांभू को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उनको राष्ट्रीय सेवा भारती और संत ईश्वर फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा "ईश्वर सेवा सम्मान – 2019" प्राप्त हुआ। 1999 में श्रीमती मेनका गांधी, "पीपुल फॉर एनीमल" ने उनके बारे में कहा था कि "भारत को उनके जैसे और लोगों की जरूरत है।" वे 2001 से 2013 तक राजस्थान सरकार के मानद वन्यजीव वार्डन थे। राजस्थान के वन मंत्री द्वारा 2003 में उन्हें प्रतिष्ठित "राज्य स्तरीय अमृता देवी बिशनोई पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। उन्हें राजस्थान के मुख्यमंत्री द्वारा राज्य स्तरीय सर्वोच्च पुरस्कार "राजीव गांधी पर्यावरण संरक्षण पुरस्कार 2014" भी प्राप्त हुआ। उन्हें राजस्थान के राज्यपाल द्वारा 'राज्य स्तरीय सर्वोत्तम वन प्रहरी पुरस्कार – 1999', राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव से यूनेस्को का "पर्यावरण रत्न पुरस्कार – 2005", राजस्थान के मुख्यमंत्री से "वीर दुर्गादास राठौड़ पुरस्कार – 2016" भी प्राप्त हुए हैं। उन्हें वन विभाग द्वारा "वन विस्तारक पुरस्कार – 2004, 2005", दैनिक पत्रिका समाचारपत्र द्वारा "कर्णधार सम्मान 2012" और दैनिक भास्कर समाचारपत्र द्वारा "ग्रीन आइडियल अवार्ड– 2011" प्राप्त हुए हैं। वह अपने नेक सपने को साकार करने के लिए अनवरत और धैर्य के साथ काम कर रहे हैं तथा इसके लिए उन्हें 1992 से विभिन्न सरकारी और स्वायत्त संस्थाओं, गैर–सरकारी संगठनों, वन विभाग, जिला कलेक्टर, जिला पुलिस अधीक्षक आदि से पाँच सौ से अधिक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।